अनुभूति के पथ में केवल एक चरण आगे बढ़ाने के समान है। श्रीकृष्ण की नाना शक्तियों के उन्मुख होना श्रीकृष्ण की ओर परोक्ष रूप से बढ़ने जैसा है। अतएव समय और सामर्थ्य का व्यर्थ अपव्यय किए बिना प्रत्यक्ष रूप से श्रीकृष्ण के ही उन्मुख हो जाना अधिक श्रेयस्कर है। उदाहरणार्थ, यदि किसी भवन के ऊपर जाने के लिए उत्थापनयन्त्र (लिफ्ट) की सुविधा उपलब्ध है तो फिर एक-एक पग रखकर सीढियों से क्यों जाया जाय? सभी कुछ श्रीकृष्ण की शक्ति के आश्रय में स्थित है; श्रीकृष्ण-आश्रय के अभाव में किसी भी सत्त्व का अस्तित्व नहीं हो सकता। श्रीकृष्ण परमेश्वर हैं, सब कुछ उनकी सम्पत्ति है और उन्हीं की शक्ति के आश्रय में है। जीवमात्र के अन्तर्यामी रूप में श्रीकृष्ण परम साक्षी हैं। हमारे निवास, देश, लोकादि, भी श्रीकृष्ण के रूप हैं। श्रीकृष्ण परम शरण्य हैं, अतएव अपनी रक्षा के लिए अथवा विपत्ति-निवारण के लिए उन्हीं की शरण में जाय। त्राणदाता शरण्य-तत्त्व चैतन्य ही हो सकता है; अतः श्रीकृष्ण परम चेतन सिद्ध होते हैं। श्रीकृष्ण हम सभी के जन्मदाता परमपिता और जीव के परम श्रेष्ठ सखा एवं सुहृद् हैं। श्रीकृष्ण सृष्टि के आदिकारण और प्रलय होने पर परम निधान हैं। यह सम्पूर्ण विवरण प्रमाण है कि श्रीकृष्ण सब कारणों के परम कारण हैं।

तपाम्यहमहं वर्षं निगृह्णाम्युत्सृजामि च।
अमृतं चैव मृत्युश्च सदसच्चाहमर्जुन।।१९।

तपामि=सूर्य के रूप में तपता हूँ; **अहम्**=मैं; **अहम्**=मैं; **वर्षम्**=वर्षा (का); **निगृह्णामि**=आकर्षण करता हूँ; **उत्सृजामि च**=फिर बरसाता हूँ; **अमृतम्**=अमृत; **च**=तथा; **एव**=निःसन्देह; **मृत्युः**=मृत्यु; **च**=भी (मैं हूँ); **सत्**=सत्ता; **असत्**=सत्ता का अभाव; **च**=भी; **अहम्**=मैं (हूँ); **अर्जुन**=हे अर्जुन।

अनुवाद

हे अर्जुन! मैं ही सूर्यरूप से जगत् को तपाता हूँ, वर्षा का आकर्षण करता हूँ और फिर उसे बरसाता हूँ। मैं मूर्तिमान् अमृत और मृत्युरूप हूँ तथा मैं ही सत् और असत् हूँ।।१९।।

तात्पर्य

श्रीकृष्ण अपनी विविध शक्तियों के द्वारा विद्युत् और सूर्य के माध्यम से तेज और प्रकाश का प्रसारण करते हैं। ग्रीष्म ऋतु में वे वर्षा को आकाश से गिरने नहीं देते और वर्षा ऋतु वे ही अविराम प्रचण्ड परिवर्षण कराते हैं। हमारी जीवन-अवधि को बढ़ा कर हमें धारण करने वाली शक्ति भी श्रीकृष्ण का रूप है और जीवन के अन्त में मृत्यु के रूप में श्रीकृष्ण से ही हमारा मिलन होना है। श्रीकृष्ण की इन नाना शक्तियों के विश्लेषण से जाना जाता है कि उनकी दृष्टि में आत्मा और जड़ प्रकृति (अनात्मा) में भेद नहीं है। श्रीकृष्ण आत्मा और अनात्मा दोनों हैं। अतएव कृष्णभावना की उत्तम अवस्था में ऐसे सम्पूर्ण भेद समाप्त हो जाते हैं। इस अवस्था